

---

# Shri RuKmini Stavam

श्रीरुक्मिणीस्तवम्

## Document Information

---

Text title : Rukmini Stavanam 2

File name : rukmiNIstavanam2.itx

Category : devii, varadAnanda

Location : doc\_devii

Author : Swami Varadananda Bharati (Pracharya A. D. ATHavale)

Transliterated by : Arun Parlikar

Proofread by : Arun Parlikar

Description/comments : bhAvArchanA

Acknowledge-Permission: Shri Dasganu Maharaj Pratishthan, Gorte <https://www.santkavidasganu.org>

Latest update : June 3, 2023

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 4, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri RuKmini Stavam

---

### श्रीरुक्मिणीस्तवम्

---



ॐ श्री

॥ श्रीशङ्कर ॥

(भुजङ्गप्रयात)

जगन्मातरं मातरं पद्मजाटेः

परब्रह्मशक्तिं परामप्रमेयाम् ।

अचिन्त्यामनन्यामनाद्यन्तरूपाम्

शुभां रुक्मिणीं कृष्णपत्नीं नमामि ॥ १ ॥

सुमान्यां शरण्यां वरेण्यां वदान्याम्

उरिप्रामिधन्यां विदलेशकन्याम् ।

सदा चन्द्रभागातटे विष्टरस्थाम्

शुभां रुक्मिणीं कृष्णपत्नीं नमामि ॥ २ ॥

विभोर्विह्वलस्यार्धभागे वसन्तीम्

सतीं पाण्डुरङ्गप्रियां कोमलाङ्गीम् ।

शरय्यन्द्रविम्भाननां दिव्यकान्तिम्

शुभां रुक्मिणीं कृष्णपत्नीं नमामि ॥ ३ ॥

यदीय प्रभावात् विधिः सर्गशक्तो

जगत्पालनेऽभूदुपेन्द्रः समर्थः ।

लये व्योमकेशोऽपि तां सार्वभौमाम्

शुभां रुक्मिणीं कृष्णपत्नीं नमामि ॥ ४ ॥

कृपालेशतोऽस्या रविर्भाति लोके

यकास्ति प्रभा विद्युतः तारकाणाम् ।

सुधांशुः सदाऽऽह्लादकोऽनङ्गसूताम्

शुभा रुक्मिणीं कृष्णपत्नीं नमामि ॥ ५ ॥

श्रुतिनामगम्यां सुभावैकगम्याम्

मनोवागतीतां विद्यानन्दसत्ताम् ।

रमां शारदां पार्वतीं सर्वमूलाम्

शुभां रुक्मिणीं कृष्णपत्नीं नमामि ॥ ६ ॥

धरित्रीं सवित्रीं समस्यादिकर्त्रीम्

त्रिलोकैकधात्रीं वरं भीमपुत्रीम् ।

भवोत्पन्नभीशोकमोहापहर्त्रीम्

शुभां रुक्मिणीं कृष्णपत्नीं नमामि ॥ ७ ॥

लसन्मञ्जुलास्यप्रभालकृतोष्ठीम्

कटाक्षे कृपाद्रां प्रियोपेन्द्रगोष्ठीम् ।

कटौ न्यस्तलस्तामनन्ताधिदेवीम्

शुभां रुक्मिणीं कृष्णपत्नीं नमामि ॥ ८ ॥


एति स्वामी वरदानन्दभारतीविरचितं श्रीरुक्मिणीस्तवं सम्पूर्णम् ।

भावार्थना (प्राचार्य अ. दा. आठवले)


<https://www.santkavidasganu.org>, <https://www.youtube.com/@varad-vani1496>

Encoded and proofread by Arun Parlikar

---

——  
*Shri RuKmini Stavam*

pdf was typeset on June 4, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

